मोहयाल मित्र

■ *जनरल मोहयाल सभा द्वारा*

प्रतिभाशाली मोहयाल विद्यार्थी सम्मानित-पुरस्कृत

जनरल मोहयाल सभा की ओर से प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को सम्मानित करने का यह बारहवाँ सम्मान–समारोह था। सन् 2004 से यह लगातार आयोजित किया जा रहा है। इस बार 109 प्रतिभाशाली विद्यार्थी सम्मानित किए गए। जनरल मोहयाल सभा के अध्यक्ष मोहयाल रत्न रायज़ादा बी.डी. बाली ने विद्यार्थियों को सम्मनित और पुरस्कृत किया और इसका संयोजन संचालन मैंने किया।

इस बार दसवीं कक्षा के साठ विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। इसमें 31 छात्र और 29 छात्राएँ थीं। सोलह विद्यार्थियों ने 100 प्रतिशत अंक (ग्रेड–ए) प्राप्त किया। इनमें 11 छात्राएँ और 9 छात्र थे। इन्हें श्री विनोद (वाइस प्रेज़ीडेंट जीएमएस) की ओर से एक–एक हजार रुपए पुरस्कार के रूप में दिए गए।

बारहवीं कक्षा के 49 विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। इनमें 30 छात्राएँ थीं और 19 छात्र थे। गत कुछ वर्षों से विद्यार्थियों के प्राप्त अंकों का प्रतिशत बढ़ता जा रहा है। यह हमारे लिए गर्व का विषय है। इस बार बारहवीं कक्षा के 23 विद्यार्थियों ने 90 प्रतिशत से लेकर 96.6 प्रतिशत के बीच अंक प्राप्त किए हैं। इन 23 विद्यार्थियों को श्री रमेश दत्ता (प्रेज़ीडेंट मोहयाल सभा फरीदाबाद, सदस्य जी.एम.एस. मैनेजिंग कमेटी) ने पुरस्कार के रूप में 500–500 रुपए दिए।

कुल 109 विद्यार्थियों में 59 छात्राएँ थीं और 50 छात्र थे। जनरल मोहयाल सभा की ओर से प्रत्येक विद्यार्थी को सम्मान–पत्र और पुरस्कार के रूप में पार्कर पेन का सेट भेंट किया गया।

इसके अतिरिक्त विद्यार्थियों को अन्य पुरस्कार भी दिए गए। बारहवीं कक्षा में सर्वाधिक अंक पाने वाले एक छात्र और एक छात्रा को 'श्रीमती केसरा देवी और मेहता तीर्थ राम मोहन ट्रस्ट' की ओर से पाँच–पाँच हज़ार रुपए और मेडल प्रदान किए गए। ये पुरस्कार श्री ओ.पी. मोहन (पूर्व सीनियर वाइस प्रेज़ीडेंट, जीएमएस) दिए जाते हैं। उन्होंने स्वयं ये पुरस्कार प्रदान किए। इन्हें प्राप्त करने वाले विद्यार्थी थे–

1. सुश्री रुचि अवतार छिब्बर (96.6) प्रतिशत छात्रा, कक्षा बारह
2. ध्रुव दत्ता (94.6) प्रतिशत छात्र, कक्षा बारह

बारहवीं कक्षा में दूसरा स्थान पाने वाले छात्र या छात्रा को 'श्री सुनहरी लाल छिब्बर स्मृति पुरस्कार', 'श्री मोहन लाल छिब्बर स्मृति पुरस्कार', 'श्रीमती शन्नो देवी छिब्बर स्मृति पुरस्कार' प्रदान किए। ये पुरस्कार श्री सुशील कुमार छिब्बर (वित्त सचिव, जीएमएस) की ओर से दिए जाते हैं। ये पुरस्कार श्रीमती कृष्णलता छिब्बर (पत्नी श्री सुशील कुमार छिब्बर) ने दिए। ये पुरस्कार इन विद्यार्थियों को दिए गए–

1. सुश्री जाह्नवी मोहन 2. सुश्री देवांशी दत्ता 3. सुश्री कंचन मेहता छिब्बर। तीनों ने 95.4 प्रतिशत अंक प्राप्त किए थे। तीनों को 2100–2100 रुपए और स्मृति चिह्न भेंट किया गया।

बारहवीं कक्षा में तीसरा स्थान प्राप्त करने वाले एक छात्र और एक छात्रा को श्री पी.के. दत्ता (वाइस प्रेज़ीडेंट, जीएमएस) की ओर से 2000–2000 रुपए भेंट किए जाते हैं। श्री पी.के. दत्ता ने इन विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया–

1. प्रबल छिब्बर (94.5) प्रतिशत 2. सुश्री रिया बाली (94.2) प्रतिशत

दसवीं और बारहवीं कक्षा में आई.टी या कंप्यूटर साइंस विषयों में सर्वाधिक अंक लेने वाले विद्यार्थियों को 'पुनीत दत्ता मीमोरियल एजूकेशन फंड' की ओर से श्रीमती अचला दत्ता और जीतेंद्र दत्ता (अमेरिका) की ओर से निम्न पुरस्कार दिए गए–

1. सौरभ बाली और चिरायु बाली (संयुक्त पुरस्कार, छात्र) दो–दो हज़ार रुपए प्रत्येक और स्मृति–चिह्न (छात्र–कक्षा बारह)

2. दिव्या दत्ता (98 प्रतिशत) दो हज़ार रुपए (छात्रा कक्षा बारह)

3. दसवीं कक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले तीन छात्रों को संयुक्त रूप से एक–एक हज़ार रुपए और स्मृति चिह्न दिए गए–

(क) श्रेयांस दत्त (ख) ऋतेश दत्ता (ग) साहिल दत्ता

छात्रा– जाह्नवी दत्ता (एक हजार रुपए और स्मृति चिह्न)

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

बारहवीं कक्षा में कॉमर्स विषयों में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने के लिए 'श्री बलदेव राज बाली और श्रीमती बिमला बाली स्मृति पुरस्कार' दिया जाता है। यह पुरस्कार श्री रवि दत्त बाली (खन्ना, फरीदाबाद) प्रदान करते हैं। इस पुरस्कार से निम्न छात्रा को पुरस्कृत किया गया– कंचन मेहता (छिब्बर) अंक 95.4 प्रतिशत, पाँच हज़ार रुपए।

पुरस्कार–सम्मान समारोह से पहले भाषण प्रतियोगिता आयोजन किया गया। इसके लिए विद्यार्थियों को विषय पहले से ही बता दिए गए थे। अंग्रेजी या हिंदी किसी भी भाषा में एक विषय पर बोलने की छूट थी। विषय थे–

1. आर्थिक रूप से कमज़ोर विद्यार्थियों की शिक्षा और विकास के लिए जनरल मोहयाल सभा किस प्रकार सहायता कर सकती है?

2. जनरल मोहयाल सभा युवा विधवाओं को स्वाबलंबी बनाने के लिए तकनीकी अथवा अन्य प्रशिक्षण ग्रहण करने में किस प्रकार सहायता कर सकती है?

3. जनरल मोहयाल सभा और स्थानीय मोहयाल सभाओं द्वारा आयोजित सांस्कृतिक और खेल संबंधी गतिविधियों में भाग लेकर युवा मोहयाल एक–दूसरे से जुड़कर मुख्यधारा में कैसे आ सकते हैं?

इस प्रतियोगिता में कक्षा बारह के निम्नलिखित विद्यार्थियों ने भाग लिया–

1. विन्नी मेहता वैद 2. रिया बाली 3. रिहेन मेहता 4. तनिष्का मोहन 5. लोकेश दत्ता 6. मोहित मेहता 7. निधि वैद 8. गर्विता बाली 9. निमिषा दत्ता 10. रुचि अवतार छिब्बर।

कक्षा दस के विद्यार्थी–

1. साक्षी वैद 2. लक्ष्य दत्त 3. अनुष्का दत्ता 4. जाह्नवी दत्ता

भाषण प्रतियोगिता के विजेता–

प्रथम स्थान–सुश्री तनिष्का मोहन (2100 रुपए)

द्विवितीय स्थान–सुश्री निमिषा दत्ता (1500 रुपए)

तृतीय स्थान–सुश्री विन्नी मेहता वैद और सुश्री निधि वैद (संयुक्त) 500–500 रुपए।

श्रीमती सुषमा मेहता और श्री पी.एल मेहता ने अपने स्वर्गीय पुत्र की स्मृति में 'श्री शैलेश मेहता स्मृति भाषण प्रतियोगिता पुरस्कार' आरंभ किया है। श्री पी.एल. मेहता और श्री योगेश मेहता ने विजेताओं को पुरस्कार–राशि भेंट की।

भाषण–प्रतियोगिता में भाग लेने वाले प्रत्येक प्रतिभागी को श्री पी.के. दत्ता की ओर से 200–200 रुपए प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किया गया।

भाषण–प्रतियोगिता के निर्णायक थे–मेजर जनरल के.के. बक्शी (सेवा निवृत्त), श्रीमती सुदेश बाली, श्रीमती नीलिमा दत्ता मेहता।

मोहयाल सभा यमुनापार दिल्ली की ओर से दसवीं और बाहरवीं कक्षा के सर्वोच्च अंक पाने वाले निम्न दो छात्र और दो छात्राओं को (1100–1100 रुपए प्रत्येक) पुरस्कृत किया।

1. सुश्री रुचि अवतार छिब्बर 2. ध्रुव दत्ता (कक्षा–बारह)

2. सुश्री अंजनि मेहता मोहन 2. ईशान दत्त (कक्षा–दस)

श्री आर.टी. मोहन की ओर से उनके द्वारा लिखित पुस्तक 'अफ़गानिस्तान रीविज़िड' कक्षा बारह के सर्वश्रेष्ठ अंक प्राप्त करने वाले दस विद्यार्थियों को मैंने भेंट की। ये दस विद्यार्थी थे– 1. सुश्री रुचि अवतार छिब्बर 2. सुश्री जाह्नवी मोहन 3. सुश्री देवांशी मोहन 4. सुश्री कंचन मेहता छिब्बर 5. ध्रुव दत्ता 6. प्रबल छिब्बर 7. सुश्री रिया बाली 8. गौरव मेहता छिब्बर 9. सुश्री तनिष्का मोहन 10. सुश्री रोहिणी दत्ता।

प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को सम्मानित–पुरस्कृत करने के अवसर पर स्मारिका प्रकाशित की गई। इसका संपादन मैंने किया था। इसका लोकार्पण रायज़ादा बी.डी बाली, श्री अशोक लव, श्री पी.के. दत्ता, श्री बी.एल. छिब्बर, ले.कर्नल एल.आर. वैद, श्री योगेश मेहता, श्री ओ.पी. मोहन और श्री डी.वी. मोहन ने किया।

प्रतिभाशाली सम्मान–समारोह की विशेषता यह रही कि इस अवसर पर युवा मोहयाल श्री तरुण दत्ता को 'मिस्टर यूनिवर्स' चुने जाने पर जनरल मोहयाल सभा की ओर से सम्मानित किया गया। इंटरनेशनल बॉडी बिल्डरर्ज़ फ़ेडरेशन' द्वारा इटली में आयोजित प्रतियोगिता में श्री तरुण दत्ता ने रायज़ादा बी.डी. बाली ने उन्हें स्मृति–चिह्न भेंट किया। इस अवसर पर उनके दो कोच भी आए थे जिन्हें सम्मानित किया। श्री तरुण दत्ता ने अपने संबोधन में युवाओं को पढ़ाई के साथ–साथ खेलों में भी रुचि लेने के लिए कहा। उन्होंने कहा कि आज समय बदल गया है। खेलों में बहुत धन आ गया है। इसे कैरियर के रूप में लिया जा सकता है। उन्हें अपने मोहयाल होने पर गर्व है।

मोहयाल रत्न रायज़ादा बी.डी. बाली ने मोहयाल ध्वज फहराकर और दीप प्रज्वलित करके समारोह को आरंभ किया था। उन्होंने प्रतिशाली मोहयाल विद्यार्थी सम्मान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को बधाई दी। इस अवसर उपस्थित लगभग चार सौ मोहयालों को संबोधित करते हुए उन्होंने आशा प्रकट की कि ये विद्यार्थी भविष्य में अपना, परिवार का और पूरी मोहयाल बिरादरी का नाम रोशन करेंगे। उन्होंने जनरल मोहयाल सभा की विभिन्न योजनाओं के विषय में बताया और सबसे अपना सहयोग करने की अपील की। उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में आर्थिक रूप से कमज़ोर विद्यार्थियों की भरसक सहायता करने का आश्वासन दिया। उन्होंने युवा विधवाओं के प्रशिक्षण लेकर अपने पैरों पर खड़े होने की अपील की। उन्होंने कहा कि के प्रशिक्षण लेकर अपने पैरों पर खड़े होने की अपील की। उन्होंने कहा कि जी.एम.एस उनकी सभी तरह की सहायता करेगी।

For courses in MERIT, visit: http://www.meritlogics.com

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

श्री पी.के. दत्ता ने देश के कोने–कोने से आए विद्यार्थियों, उनके माता–पिता और अभिभावकों का धन्यवाद किया।

'प्रतिभाशाली मोहयाल विद्यार्थी सम्मान' का आयोजन श्रमसाध्य कार्य था। इसकी प्रक्रिया बोर्ड के परीक्षा–परिणाम से आरंभ हो जाती है। मई में परीक्षा–परिणाम आते हैं। जून–जुलाई, अगस्त महीनों के 'मोहयाल मित्र' में फार्म प्रकाशित करके आवेदन–पत्र मंगाएँ जाते हैं। अंक–तालिकाओं में अंकों की जाँच आदि की जाती है। इस लंबी प्रक्रिया के पश्चात प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को सम्मानित किया जाता है। इस वर्ष माता–पिता और अभिभावकों की रिकार्ड–तोड़ उपस्थिति ने हमारे उद्देश्य की पूर्ति की है। जनरल मोहयाल सभा के कार्यों और गवितिविधियों में सहयोग हमें समर्पित भाव से कार्य करने की प्रेरणा देता है। इस समारोह की सफलता का श्रेय मोहयाल रत्न रायज़ादा बी.डी. बाली जी को उनके मार्गदर्शन के लिए जाता है। मैं उनके मार्गदर्शन से इसका आयोजन–संचालन कर सका। श्री पी.के. दत्ता ने आयोजन में सक्रिय सहयोग दिया। जनरल मोहयाल सभा के कार्यालय की टीम ने कार्यालय–अधीक्षक कैप्टन के.एल. डोभाल के नेतृत्व में समर्पित भाव से कार्य किया। श्री ऋषभ त्यागी ने स्मारिका प्रकाशन आदि के लिए सहयोग किया। मैं इन सबका धन्यवाद करता हूँ।

आशा है विद्यार्थी मन लगाकर पढ़ेंगे और श्रेष्ठ अंक लाकर देश का, अपना, परिवार का, मोहयाल समाज का नाम उज्ज्वल करेंगे। बोर्ड की परीक्षाओं की तैयारी कर रहे सभी विद्यार्थियों को हमारी शुभकामनाएँ!

अशोक लव *(संयोजक–प्रतिभाशाली मोहयाल विद्यार्थी सम्मान)*

बधाई

मैं के.के. बाली एवम् सरोज बाली अपने दोहते **मास्टर केतन शर्मा** के छठे जन्मदिन 28.01.2016 की खुशी में उसकी मम्मी श्रीमती हर्ष शर्मा, पापा श्री प्रमोद शर्मा, दादी श्रीमती सुरेन्द्र शर्मा एवम् परिवार के अन्य सदस्यों को बहुत–बहुत बधाई देते हैं। ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि उसे आशीर्वाद दें, जिससे वह दिन दुगनी–रात चौगुनी उन्नति करें। 'तुम जिओ हजारो साल, साल के दिन हो एक हज़ार' इस खुशी में मैं के.के बाली जी.एम.एस. को एक सौ एक रुपए भेंट करता हूँ।

के.के. बाली, *जिला प्रधान एंटी करप्शन ट जलंधर*

प्रोफेसर जे.एस. बाली को जन्मदिन की बधाई

गत 18 दिसंबर 2015 को मोहयाल सभा देहरादून के प्रोफेसर जे.एस. बाली (राजपुर रोड देहरादून) के 92वें जन्मदिन पर

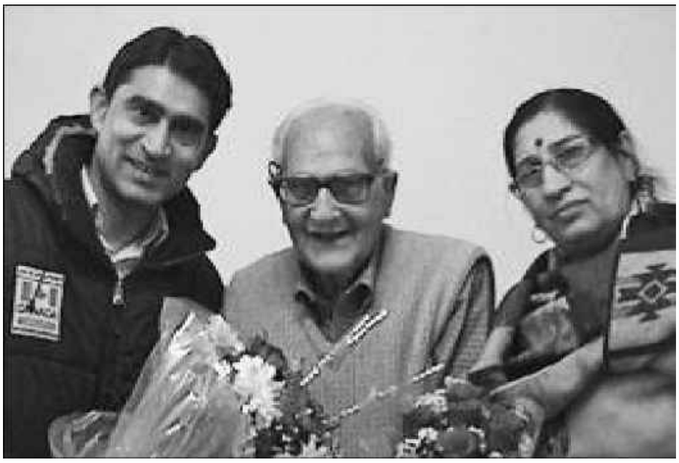

पुष्प–गुच्छ भेंट कर और केक काट कर शुभकामनाएँ देते हुए खुशी मनाई। इस अवसर पर सभा के भूतपूर्व सदस्य श्री तरुण मोहन, श्रीमती अरुणा मोहन, श्री पुनीत दत्ता, प्रोफेसर कमल रतन वैद, उपप्रधान श्री एस.के. छिब्बर एवं सभा के कई अन्य सदस्यों ने उनके स्वस्थ जीवन की कामना की।

सद्भाव का राग

ओ नफरत के लिखने वाले,
क्यूं उल्टी लिख रहा तख्ती हैं
खून–खराबं कीचड़ से
अब ऊब चुकी यह धरती हैं।

कौमों से कौमें लड़वाकर,
जाति से जाति भिड़वाकर,
तू कहता कौम परस्ती हैं,
पर इस आग में दुनिया जलती हैं।

हिन्दु हो या मुस्लिम,
सिख हो या ईसाई,
मानव हैं मानव का भाई,
इस गुत्थी को समझ न पाया,
यही मानव की बदबख्ती हैं।

कहें "बक्शी" अंध विश्वास के टीले पै,
खड़ी क्यूं ये फिरका परस्ती हैं,
गिरा दें नौजवां इसको,
तुझे नई बनानी बस्ती हैं।

वजीरचन्द बक्शी

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

मोहयाल सभाओं की गतिविधियाँ

नजफढ़–नई दिल्ली

मोहयाल सभा नजफगढ़, नई दिल्ली की मासिक बैठक 03.01.2016 को प्रधान श्री शेरजंग बाली की अध्यक्षता में मोहयाल आश्रम वृंदावन में मोहयाली प्रार्थना व गायत्री मंत्रोच्चारण के साथ आरम्भ हुई, जिसमें 27 भाई–बहनों ने भाग लिया। सभा के सचिव श्री हर्ष दत्ता जी ने पिछले माह की कार्यवाही पढ़कर सुनाई, वित्त सचिव श्री बलदेव राज दत्ता जी ने लेखा–जोखा पेश किया, जिसका सब सदस्यों ने अनुमोदन किया।

प्रधान जी ने सभी को अपनी व सभा की ओर से नववर्ष 2016 की बधाई व शुभकामनाएँ दी। प्रतिभाशाली मोहयाल विद्यार्थी सम्मान रविवार 10 जनवरी 2016 को प्रातः 11 बजे मोहयाल फाउंडेशन, नई दिल्ली में होगा। मोहयाल सभा नजफगढ़ को वार्षिक आफिलिएशन फीस 200 रुपए जीएमएस में जमा करवाने हैं। एमएस नजफगढ़ से जीएमएस नुमांइदे के तौर पर श्री हर्ष दत्ता सचिव (दत्ता प्लाजा, 22 ओल्ड रोशनपुरा, नजफगढ़, नई दिल्ली मो. 9312174583) को नियुक्त किया जाता है।

प्रधान जी ने सुझाव दिया कि एमएस नजफगढ़ का वार्षिक सदस्य शुल्क 50 रुपए के स्थान पर 100 रुपए होना चाहिए। सभी उपस्थित जनों ने इसका अनुमोदन किया। एमएस नजफगढ़ का वार्षिक सदस्य शुल्क 100 रुपए तथा जीएमएस का वार्षिक सदस्य शुल्क 100 रुपए जमा करने के लिए सभी ने अनुमोदन किया।

जिन मोहयाल विधवाओं व जरूरतमंद लोगों को जीएमएस से आर्थिक सहायता मिलती है, वह अपना लाइव प्रमाण–पत्र 7 फरवरी 2016 तक एमएस नजफगढ़ में दे दें ताकि 29 फरवरी 2016 से पहले जीएमएस में जमा करवा सकें।

चर्चा के लिए खास मुद्दा न होने के कारण बैठक की समाप्ति की घोषणा की गई।

अगली बैठक दिनांक 07.02.2016 को श्री हर्ष दत्ता, सचिव के निवास स्थान, दत्ता प्लाजा, 22, ओल्ड रोशनपुरा, नजफगढ़, नई दिल्ली–110043 में प्रातः 10.30 बजे होगी। सभी सदस्यों से उपस्थित होने का निवेदन है।

शेरजंग बाली, *प्रधान*
मो.: 9871756765

हर्ष दत्ता, *सचिव*
मो. 9312174583

कुरूक्षेत्र

मोहयाल सभा कुरूक्षेत्र की बैठक 03.01.2016 को निवास स्थान श्री रविंदर नाथ छिब्बर के यहां श्री प्रकाश बाली उप प्रधान की अध्यक्षता में 15 सदस्यों ने भाग लिया। मोहयाल प्रार्थना के बाद पिछली बैठक की कार्यवाही पढ़कर सुनाई तथा सभी ने इसका अनुमोदन किया।

शोक समाचारः रायज़ादा बी.डी. बाली जी के भानजे मेजर दीपक दत्त के निधन पर सभा में दो मिनट का मौन रखा गया।

सभा में करोलबाग दिल्ली से आए श्री प्रदीप मेहता व उनके सुपुत्र श्री प्रतीक मेहता का सभा में आने पर स्वागत किया गया। सभा में नए सदस्यों की उपस्थिति बढ़ाने पर विचार विमर्श किया गया। इसके बारे में चितरंजन कौशल जी और हकीकत मेहता जी ने सुझाव दिए। जनरल सेक्रेटरी मोहिन्दर बक्शी जी ने आश्वस्त किया कि प्रधान संतोष वैद जी के मुम्बई से आने के पश्चात् इन सुझावों पर बात की जाएगी।

मोहिन्दर बक्शी जी व सूरज प्रकाश बाली जी ने जलपान के लिए रविंदर नाथ छिब्बर जी का धन्यवाद किया। सभा समापन गायत्री मंत्र के साथ हुआ।

मोहिन्दर बक्शी, *महासचिव (9812134938)*

फरीदाबाद

मोहयाल सभा फरीदाबाद की मासिक बैठक 3 जनवरी 2016 को श्री रमेश दत्ता जी की अध्यक्षता में मोहयाल भवन में सम्पन्न हुई, जिसमें 32 भाई–बहनों ने भाग लिया। मोहयाल प्रार्थना के उपरान्त रायज़ादा के.एस. बाली जी ने पिछले माह की रिपोर्ट पढ़कर सुनाई व सभी को नववर्ष 2016 की बधाई दी।

श्री रमेश दत्ता जी ने बताया कि श्री बलराम दत्ता जी के सुपुत्र दुर्घटनाग्रस्त हुए हैं, प्रभु की कृपा से उनकी जान बची है। सभी ने परमात्मा का धन्यवाद किया व उनके पुत्र की दीर्घायु की कामना की। इस अवसर पर श्रीमती बाला बाली जी व श्रीमती आशु वैद जी ने भजन व गीत प्रस्तुत करके सभी को नए साल की शुभकामनाएँ दीं। दत्ता जी ने सभी को 10 जनवरी को आयोजित प्रतिभाशाली विद्यार्थी सम्मान के बारे में बताया व कहा कि जिनको जीएमएस की ओर से पत्र आया है, वे अपने बच्चों के साथ कार्यक्रम में अवश्य उपस्थित हों।

 For courses in MERIT, visit: http://www.meritlogics.com

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

इस अवसर श्री मिथलेश दत्ता जी ने निम्न राशि एकत्र की–

श्री ओ.पी. मोहन जी ने अपने विवाह की 70वीं वर्षगांठ के अवसर पर 25,000 रुपए भेंट किए। यह राशि उन्होंने 6 दिसंबर को हुए फरीदाबाद प्रतिभाशाली विद्यार्थी सम्मान व 'शकुंतला मोहन हॉल' के उद्घाटन के अवसर पर भोजन के लिए भेंट किए गए। श्री रमेश वैद जी ने अपनी माताजी श्रीमती शकुंतला वैद के 78वें जन्मदिन के अवसर पर 5100 रु. फरीदाबाद मोहयाल को भेंट किए। श्री प्रमोद दत्ता जी ने अपनी माताजी श्रीमती कृष्णा दत्ता जी याद में 500 रु., श्री जगमोहन छिब्बर जी ने 500 रु., श्री दर्शाना दत्ता व श्री प्रह्लाद बाली जी ने 100–100 रुपए सहयोग राशि के रुप में भेंट किए।

श्री रमेश दत्ता जी ने सभी भाई–बहनों को नववर्ष की बधाई दी व सभी की ओर से श्री बलराम दत्ता जी को स्वादिष्ट खाने के लिए धन्यवाद किया। अगली मीटिंग 7 फरवरी को होगी।

रमेश दत्ता, *प्रधान* ***रायज़ादा के.एस. बाली,*** *महासचिव*
मो.: 9212557096 *मो. 9899068573*

जालंधर शहर

मोहयाल सभा जलंधर शहर की मासिक बैठक 20 दिसंबर 2015 को शाम मेहता यादगार भाई मतिदास मोहयाल भवन लिंग रोड में मोहयाली प्रार्थना के उपरांत सभा के उपप्रधान श्री विजय दत्ता की अध्यक्षता में हुई। महासचिव श्री एस.के. दत्ता ने सभा की कार्यवाही आरम्भ करते हुए कहा सभी सदस्यों को मालुम होगा सभा के प्रधान श्री आत्म सरूप दत्ता जी का निधन 7 दिसंबर को हो गया था, आज की बैठक शोक सभा होगी।

सचिव अशोक दत्ता ने दत्ता परिवार की मोहयाल बिरादरी एवं समाज के प्रति सेवाओं का विस्तार से ज़िक्र किया। दत्ता जी के बारे में समाचार पत्र पंजाब केसरी, दैनिक भास्कर, दैनिक जागरण, दैनिक सवेरा में प्रमुखता से प्रकाशन हुआ। जालंधर का प्रसिद्ध बाबा हरिवल्भ संगीत सम्मेलन इस बार दत्ता जी को था, दत्ता जी संगीत महासभा के उपप्रधान थे। जीएमएस के सदस्य पुष्प बाली ने दत्ता जी के निधन को बिरादरी को न पूरी होने वाली क्षति बताया। कैप्टन सुदेश कुमार दत्ता ने कहा– दत्ता परिवार द्वारा बिरादरी की जो सेवा की है, उसे सदैव याद किया जाएगा। चौधरी राजेश्वर दत्ता, प्रोफेसर वी. के. दत्ता, सर्वश्री वी.एम. दत्ता,दर्शन कुमार मोहन, सोहन सिंह बाली, शीतिल मोहन, बलवीर बाली, नवीन दत्ता, ओ.पी. दत्ता, जी.के. बाली, के.के. बाली, बी.एम. मेहता, सुनील दत्ता (के.सी) और सुनील दत्ता (कैशियर) ने दत्ता जी को याद किया।

जी.एम.एस के ट्रस्टी, मोहयाल सभा के सरप्रस्त चौ. राजेश्वर दत्ता, सदस्या जीएमएस पुष्प बाली, एस.के. दत्ता ने सभा की कार्यवाही को सुचारु रूप से चलाने के लिए सभा के उपप्रधान विजय दत्ता को वैकल्पिक प्रधान नियुक्त किया। सभी सदस्यों का मत था जो मोहयाल भवन के निर्माण का कार्य दत्ता जी आरम्भ करवा कर चले गए उसे पूरा किया जाए तथा उन सभी मोहयालों का सपना मोहयाल भवन बनाने के लिए श्री जी.के. बाली ने 5000 रु., श्री पुष्प बाली ने 500 रु. कैप्टन एस. के. दत्ता ने 250 रुपए श्री वी.एम. दत्ता 250 रुपए भेंट किए। एस.के. दत्ता महासचिव की अपील पर जिन मोहयालों ने साल 2015–16 की सदस्यता 100 रु. नहीं दी थी, उन्होंने कैशियर सुनील दत्ता को जमा करवा दी।

सभा की समापन दिवंगत प्रधान आत्म सरूप दत्ता जी को दो मिनट मौन खड़े होकर सभी सदस्यों ने श्रद्धांजलि दी। ओम् शांति! शांति!!

अशोक कुमार दत्ता, *सचिव (मो. 09779890717)*

होशियारपुर

आज दिनांक 6.12.2015 को मोहयाल सभा होशियारपुर की एक मासिक बैठक प्रधान श्री श्यामसुन्दर दत्ता जी की अध्यक्षता में मोहयाल भवन ऊना रोड पर हुई। सबसे पहले पाँ बार गायत्री का पाठ किया गया। सभी मोहयाल भाईयों ने शशपिन्द्र बाली जो 30.11.2015 को ए.एस.आई. के पद से पंजाब पुलिस पंजाब से सेवा मुक्त हुए हैं, के पत्नी सहित आने पर उनका स्वागत किया तथा उन्होंने सेवानिवृत्त की बधाई दी। उन्होंने 1100 रु. जीएमएस के लिए तथा 1100 रु. एमएस होशियारपुर सभा को भेंट किए। प्रधान जी ने भी अपने पोते व दोहती के जन्म की खुशी में 500 जीएमएस और 500 रुपए लोकल सभा को प्रदान किए। प्रधान जी ने कहा कि अब श्री शशपिन्द्र बाली सेवा मुक्त होने के बाद सभा के कार्यों में और अधिक रुचि से कार्य करेंगे।

इस अवसर पर विजयंत बाली, वरिन्द्र दत्ता वैद, इन्द्रमोहन बाली, दिनेश चन्द्र दत्ता, श्री पी.पी. मोहन, सुभाषचन्द्र दत्त, मनोज दत्ता, पवन मेहता और जगमोहन मैहता उपस्थित थे।

मनोज दत्ता व विजयंत बाली

प्रेमनगर–देहरादून

मोहयाल सभा प्रेमनगर की बैठक 29.11.2015 को निवास स्थान श्री मेहिन्द्र दत्ता एवं श्री उदय दत्ता जी के श्री डी.एन. दत्ता प्रधान की अध्यक्षता में 30 सदस्यों ने भाग लिया।

मोहयाल प्रार्थना के पश्चात बैठक की कार्यवाही प्रारम्भ की गई। पिछले माह की कार्यवाही पढ़कर सुनाई। स्व. श्री कृष्णलाल दत्ता, स्व. श्री कृष्ण कुमार बाली एवं स्व. श्री अश्विनी दत्ता सभा के भूतपूर्व प्रधान, उप–प्रधान एवं संयुक्त

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

सचिव द्वारा किए गए कार्यों को याद करते हुए उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई। श्रीमती नूतन शर्मा (लौ) पत्नी श्री गंगा प्रसाद लौ जी का लेख 'मेरी वृंदावन यात्रा' जो कि मोहयाल मित्र नवम्बर 2015 के अंक में प्रकाशित हुआ था सभी ने उक्त लेख की सराहना की।

हमारे वरिष्ठ सदस्य श्री रमेश दत्ता जी ने सुझाव दिया कि बिधौली गाँव (देहरादून) में स्थित प्रतिष्ठित पैट्रोलियम विश्वविद्यालय में अध्यनरत छात्रों के लिए एक मोहयाल भोजनालय की स्थापना की जाए। जिससे वहाँ के छात्रों को शुद्ध एवं ताजा भोजन प्राप्त हो सकें। इस सुझाव का सभा में उपस्थित सभी सदस्यों ने स्वागत किया। श्री रमेश दत्ता जी ने कहा कि इस कार्य के क्रियान्वयन हेतु सभा के सदस्य ऋण के रूप में अपना अंशदान कर सकते हैं। जिसको सदस्यों को निश्चित अवधि के पश्चात लाभ सहित लौटा दिया जाएगा। इनके इस सुझाव पर 1,50,000 रु. देने का प्रस्ताव सदस्यों द्वारा आया, जिसमें श्री कमल रतन वैद एवं श्री हर्षवीर मेहता का विशेष योगदान रहा। इसी समय सभा के कुछ सदस्यों ने 15,000 रुपए की नकद धनराशि प्रदान की। उक्त भोजनालय का उद्घाटन 14 जनवरी 2016 को मकर संक्रांति के शुभ अवसर पर किए जाने की घोषणा की गई। उस दिन सबको निःशुल्क भोजन दिया जाएगा। उक्त भोजनालय के लिए बर्तन आदि की सेवा, श्री रमेश दत्ता जी द्वारा की जाएगी।

अन्त में सभा में आए सभी सदस्यों स्वादिष्ट भोजन एवं जलपान के लिए दत्ता परिवार का धन्यवाद किया।

राजेश बाली, *सचिव (मो. 9758135583)*

बराड़ा

मोहयाल सभा बराड़ा की मासिक बैठक दिनांक 03.01.2016 को सभा के प्रधान सरदार हरदीप सिंह वैद जी की अध्यक्षता में सभा के सेक्रेटरी श्री रविन्द्र कुमार छिब्बर के निवास स्थान पर गायत्री मंत्रोच्चारण व मोहयाली प्रार्थना के साथ आरम्भ हुई, जिसमें 10 भाई–बहनों ने भाग लिया। सर्वप्रथम सभी सदस्यों ने एक–दूसरे को नववर्ष 2016 के आगमन की बधाई दी व शुभकामना की। सभा के वित्त सचिव श्री बलदेव सिंह दत्ता जी ने पिछले माह की कार्यवाही पढ़कर सुनाई, सभी ने अपनी सहमति प्रकट की।

शोक समाचारः (1) गौरव मैहता (27 वर्ष) सुपुत्र प्रदीप मैहता पौत्र श्रीमती स्व. शांति देवी मेहता व श्री स्व. सोहनलाल मेहता (निवासी गांव सिम्बला) का निधन 22 दिसंबर 2015 को अचानक हुआ। सभी सदस्यों ने दो मिनट मौन रखकर उसकी आत्मा की शांति के लिए प्रभु से प्रार्थना की व परिवार के प्रति गहरी संवेदना प्रकट की।

श्रीमती रोज़ी वैद पत्नी श्री सुनील कुमार वैद निवासी गाँव सिम्बला का निधन 31 दिसम्बर 2015 को हुआ। सभी सदस्यों ने दो मिनट मौन रखकर उसकी आत्मा की शांति के लिए प्रभु से प्रार्थना की।

अन्त में सभी सदस्यों ने जलपान के लिए श्री रविन्द्र कुमार छिब्बर व परिवार का धन्यवाद किया।

रविन्दर कुमार छिब्बर, *सेक्रेटरी*
मो. 09466213488

बेबी अथर्व अमित दत्ता उर्फ कृष्णा की पहली लोहड़ी

अथर्व अमित दत्ता पुत्र श्रीमती शिल्पी अमित दत्ता पौत्र श्रीमती सुमन एस.पी. दत्ता सचिव मोहयाल सभा आगरा प्रपौत्र स्व. श्रीमती रामखेत्री दत्ता एवं स्व. डॉ. बिशेश्वर नाथ

दत्ता की पहली लोहड़ी सभी परिवारिक सदस्यों द्वारा 13.01. 2016 को सनातन धर्म सभा (हनुमान धर्मशाला) ताजगंज, आगरा पर बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाई गई। जिसमें अथर्व की बहन सारा दत्ता व आनिया दत्ता, नानी–नाना, मामी–मामा, चाची–चाचा श्रीमती पूजा दत्ता–धीरज दत्ता, बड़े दादू श्री सत्यप्रकाश दत्ता, बुआ श्रीमती मनु वैद व सुभाष वैद, श्रीमती अमिता बाली व अरुण बाली, श्रीमती कविता बाली व पराग बाली, श्रीमती दीपिका मोहन व विक्रम मोहन, श्रीमती प्रतिभा बक्शी व पुनीत बक्शी, श्रीमती सरिता व सुनील शर्मा व अन्य सभी भाई बहिनों व मोहयाल सभा आगरा के संरक्षक श्री कामरान दत्ता जी, बालकृष्ण मोहन, राजन दत्ता, राजेश दत्ता, अमित बक्शी, अनिल मेहता, दीपक मेहता, दिल्ली से गौरव छिब्बर, फरीदाबाद से अशोक मेहता व अन्य सपरिवार सम्मलित हुए।

सभी लोगों ने अथर्व को ढेर सारा प्यार व उज्ज्वल भविष्य व दीर्घायु की शुभकामनाएँ दी व दत्ता परिवार को बधाई दी। दत्ता परिवार ने उपस्थित सभी लोगों का स्वागत व अभिनन्दन किया। दत्ता परिवार ने मोहयाल सभा आगरा को 250 रुपए व जीएमएस को भी 250 रुपए शिक्षा फंड में भेंट किए।

एस.पी. दत्ता, *सचिव एमएस आगरा (मो. 9897455755)*

For courses in MERIT, visit: http://www.meritlogics.com

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

अंतिम यात्रा

मैहता वेद प्रकाश वैद का निधन

स्वर्गीय मैहता वेद प्रकाश वैद जी का निधन उनके निवास स्थान यमुना नगर (हरियाणा) में दिनांक 14 अगस्त 2015 को हुआ। उनकी रस्म–पगड़ी 24 अगस्त 2015 को सम्पन्न हुई।

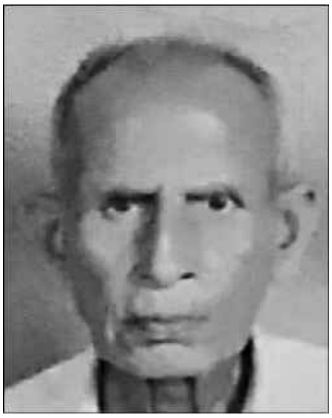

मैहता वेद प्रकाश वैद जी का जन्म 26 जनवरी 1933 को गाँव वरवाल, तहसील चकवाल, जिला जेहलम (अब पाकिस्तान) में मैहता शरमपत वैद जी के घर हुआ। विभाजन के पश्चात परिवार पहले जालंधर और बाद में यमुना नगर में आकर बस गया। मैहता वेद प्रकाश जी अपने पीछे पत्नी श्रीमती राज रानी वैद, दो बेटे राजकुमार वैद और राजीव कुमार वैद, दो बेटियां मोना और अन्जू तथा पोता पोती व दोता–दोतीयां हैं। श्रीमती राजरानी वैद ने सौ–सौ रुपए जीएमएस और मोहयाल सभा जगाधरी वर्कशाप को भेंट किए।

श्री प्रह्लाद बाली जी का निधन

श्री प्रह्लाद बाली सुपुत्र स्व. श्री नारायण सिंह बाली जी का गत 17 दिसंबर 2015 को निधन हो गया। उनकी रस्म–पगड़ी 27 दिसंबर 2015 को थी। वे मोहयाल सभा पानीपत के संस्थापक सदस्यों में से एक थे। उन्होंने पानीपत सभा के महासचिव के रूप में भी कई वर्षों तक कार्य किया।

श्री बाली जी की धर्मपत्नी श्रीमती शांता बाली का वर्षों पूर्व निधन हो गया था। उन्होंने परिवार का पालन पोषण व माँ का फ़र्ज़ भी बखूबी निभाया। श्री बाली जी का मिलनसार व्यक्तित्व था। श्री ऋत मोहन जी ने उनके निधन को बिरादरी के लिए क्षति बताया है। परिवार में उनके पुत्र श्री दीपक बाली व श्रीमती रजनी बाली, श्री रुपक बाली व श्रीमती रीतू बाली जी हैं। परिवार ने इस मौके पर 500 रुपए जीएमएस को दान स्वरूप भेंट किए।

***–नरिंदर छिब्बर** (9416412184)*

श्रीमती चन्द्रकान्ता का देहांत

हमारी पूज्यनीय नानी श्रीमती चन्द्रकान्ता का 07.12.2015 को लम्बी बीमारी से 82 वर्ष की आयु में निधन हो गया। हमारी नानी जी बड़ी धार्मिक, सहनशील और पतिव्रता महिला थीं। उनका जन्म जम्मू प्रांत में हुआ और विवाह श्री बृजमोहन छिब्बर से दिल्ली में हुआ। बीमारी की अवस्था में उनके दामाद कमल दत्ता और पुत्री नीलम दत्ता ने बड़ी सेवा की, जिनका शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता। नानी जी के परिवार में पुत्री नीलम दत्ता, दामाद कमल दत्ता, नाती पुनीत, विनीत दत्ता, बहुएँ मोनिका, बिन्दू तथा परनाती ऋतिक तथा परनाती अरना है। नानी के देवर चन्द्रमोहन छिब्बर ने दाह–संस्कार तथा सभी धार्मिक रीति–रिवाज़ सम्पन्न किए। परिवार की ओर से जीएमएस, मोहयाल सभा यमुनापार दिल्ली, रघुनाथ मन्दिर, सावरकर मन्दिर, आर्य समाज मन्दिर और गौशाला प्रत्येक को 500–500 रुपए की राशि अर्पित की। हम सब परिवार के सदस्य, देवों के देव महादेव शंकर भगवान से प्रार्थना करते हैं कि उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें।

***–पुनीत, विनीत, सिद्धार्थ दत्त,** बी–1/14, कृष्ण नगर, दिल्ली, मो. 9250185330*

स्व. श्रीमती संतोष बाली की पहली पुण्य-तिथि

आज 8 फरवरी हमारी दीदी की पहली बरसी है। आपके जाने के बाद कोई एक पल भी नहीं आया, जिस समय हमें आपकी कमी महसूस न हुई हो, हर खुशी के पल या कोई त्योहार हो हमारी आँखें आपकी याद में नम ही रहती हैं। दीदी आपके भतीजे (निक्की) की शादी में मैंने आपकी कमी बहुत महसूस की।

संतोष जी एक धार्मिक महिला थीं तथा सबके सुख–दुःख में दिल से शामिल होती थीं।

"एक बरस बीता मानो एक युग की तरह,
चले गए हम सबको छोड़ कर जाने कहाँ।"

हमारी दीदी ने अपने जीवन काल में हर रूप एवं रिश्तों को बखूबी निभाया। हमें आज भी विश्वास नहीं होता कि वह हमारे बीच नहीं हैं। ऐसा महसूस होता है कि वह यहीं कहीं आस–पास ही हैं। हम आपको बहुत प्यार करते हैं, आप हम सबके दिलों में रहते हैं।

आपकी यादों में, आपकी भाभी ***–सुनीता दत्ता***

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

स्व. श्रीमती नरेन्द्र कुमारी वैद (प्रेम) की प्रथम पुण्य-तिथि

"तुम जितने भी हम से दूर जाए,
उतनी हमसे किनारा कर बैठे,
हमसे किनारा हो न सका।"

मेरी धर्म पत्नी स्वर्गीय श्रीमती नरेन्द्र कुमारी वैद (प्रेम) की पहली बरसी उनके निवास स्थान 662/11, सी–3, शिवपुरी, दिल्ली–110051।

इस उपलक्ष्य में हवन, शांति पाठ करवाया गया। जिसमें उसके पति श्री मदन मोहन वैद, श्रीमती आरती वैद (पुत्र वधू), कुमारी प्रीति वैद (पोती), श्री शिवम् और शुभम वैद (पोते) और परिवार के अन्य सदस्यों व मित्र गण उपस्थित थे। श्रीमती नरेन्द्र कुमारी धार्मिक विचारों और संस्कारों वाली महिला थीं। इसके बाद ब्रह्म भोज में उपस्थित अतिथियों ने प्रीति भोज किया। वैद परिवार ने 500 रुपए मोहयाल सभा यमुनापार और 200 रु. जीएमएस को विधवा फण्ड के लिए दिए।–*मदन मोहन वैद (मो.) 8750383818, फोन: 22442768*

परमपूज्य माता श्रीमती शान्ति देवी मोहन एवं पिता श्री रघुनाथ सहाय मोहन को अश्रुभीनी श्रद्धांजलि

आभार

किसका आभार मानूँ
ईश्वर का या माँ–बाप का,
एक ने जीवन दिया, तो एक ने जीना सिखाया,
एक ने पग दिए, तो एक ने चलना सिखाया।
एक ने नींद दी तो एक ने लोरी गाकर सुला,
एक ने भूख दी तो एक ने प्यार से मुझे खिलाया।
एक ने वाणी दी, तो एक ने बोलना सिखाया,
एक ने जन्मजात संस्कार दिए, तो एक ने सुंस्कारों से मुझे सजाया।
'आभार इन दोनों का–
एक साँस है तो एक उन साँसों का मालिक,
एक से मेरा आस्तित्व है,
तो दूसरा मेरे अस्तित्व की पहचान।
परम पिता परमात्मा
एवं मेरे परम प्रिय माता–पिता।
शत् शत् नमन है तुम्हें!

प्रभा मेहता
6–विकास, निकट डॉन बास्को स्कूल,
जीवन पार्क अहमदाबाद

कौन हारा-कौन जीता

(1965 भारत–पाक युद्ध के सम्बन्ध में)

न हम हारे, न तुम जीते, यहाँ जीता हुआ भी हारा है।
गाल, बाजे अपने–अपने, है उसने फिर ललकारा।।
सच में हार उसी की हुई, जहाँ कभी न फिरा दुलारा।।।

न हम हारे, न तुम जीते, यहाँ जीता हुआ भी हारा है।
अरे मानो या न मानो भाई, जीत उसी की हुई दोबारा।।
हथियारों की खेप सजाई, इसे–उसे फिर शुशकारा।।।

न हम हारे, न तुम जीते, यहाँ जीता हुआ भी हारा है।
हार–जीत तो तब ही होती, यदि युद्ध न होता दोबारा।।
राम, रावण रोज़ मारते, अब तक अधर्मी न मारा।।।

अगर चाहो तुम जंग जीतना, कुनबा एक करो फिर अपना।
यों तोड़ आज़ादी की दीवारें, तुम पुकारो, हम पुकारें।।
न तुम हारे, न तुम जीते, हम ही हारे, हम ही जीते।।।

***अशोक कुमार दत्त,** एडवोकेट (मो.) 7417023338*

रचनाएँ भेजते समय ध्यान दें

रचनाएँ पोस्टकार्ड या छोटे–छोटे कागज के टुकड़ों पर लिखकर न भेजें। रिपोर्ट और रचनाएँ आदि साफ़ स्पष्ट और शुद्ध लिखें जिन्हें पढ़ा जा सके। ई–मेल से रचनाएँ टाइप करके ही भेजें।

प्रत्येक रचना भेजने के पश्चात दो माह प्रतीक्षा करें। इसके पश्चात ही कार्यालय से पूछताछ करें।

मोहयाल मित्र बिरादरी की धड़कन है, बिरादरी की शान है, परिवारों के सुख–दुःख का साथी है। इससे देश–विदेश में बसे मोहयालों के समाचार एक–दूसरे तक पहुँचते हैं। रिश्ते–नाते कराने का माध्यम है। जीएमएस द्वारा किए कार्यों और योजनाओं की जानकारी का साधन है। मोहयाल मित्र का वार्षिक शुल्क केवल 200 रु. हैं

For courses in MERIT, visit: http://www.meritlogics.com

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

मोहयाल, मोह्यालियत और इतिहास

मोहयाल जाति को अपने पूर्वजों पर बड़ा गर्व है। सातवीं शताब्दी से जब तक सशक्त इस्लामी लहर अरब से निकल कर हर ओर छा रही थी, हमारे पूर्वज देश की सीमाओं के प्रहरी थे। इन वैभवशाली शासकों ने लम्बे समय तक क्रूर आक्रमणकारियों का प्रतिरोध किया। उन वीरों का वंशज होने के कारण हर मोहयाल गौरव महसूस करता है। यह आत्म–सम्मान ही मोह्यालियत है। मोह्यालियत की और कोई परिभाषा नहीं है। आप इस पर चिंतन करें। कोई और बेहतर विकल्प हो तो उसको भी सामने लाएँ।

हर विजेता प्रायः पुराने शासकों को विध्वस्त कर देता हैं। पंजाब पर विदेशी (गज़नवी) शासन हो जाने पर (1026 ई.) वैद (मोहयाल) राजवंश ने कश्मीर में जा कर शरण ली। परन्तु उनसे जुड़े बाकी मोहयाल कबीलों के लिए बड़ा कठिन समय रहा होगा। उनके पहले जैसे अच्छे दिन फिर कभी लौट कर नहीं आए। कालान्तर में सारा देश गुलाम हो गया। इन परिस्थितियों में भी मोहयाल जाति ने दस शताब्दियों तक अपने पूर्वजों की गौरव गाथा को याद रखा। मोहयाली कविताओं को फिर से ध्यान से पढिए। हमारे भाट सामान्य रूप से (मोहयाल कहावन कठिन है...) हमारा यशोगान करते थे। किसी की हिम्मत नहीं थी के मुस्लिम शासन में कासिम के विरुद्ध मोहयाल डाहर की या मुहम्मद ग़ज़नवी के विरुद्ध त्रिलोचनपाल की खुले आम प्रशंसा कर सके। कुछ बात है कि एक हजार वर्ष में शासकों की नौकरी करते हुए भी मोहयालों ने अपना धर्म और अपना आत्मसम्मान पूरी तरह सुरक्षित रखा। अपनी मोह्यालियत को सदैव कायम रखा। यही मोहयाल जाति की विशेषता रही है।

अंग्रेजी राज में पढ़ाई और मुद्रण की उपलब्धता से मोहयालों में अपने इतिहास को लिखित रूप देने की लालसा जगी। बहुत प्रयास करने पर भी मोहयाल परिवारों में जो यादें प्रचलित थीं उसी सामग्री को इकट्ठा करके मोहयाल इतिहास की पुस्तकें छपती रहीं। उसमें कल्पित घटनाएं भी जोड़ दी हैं जैसे अश्वथामा का अरब देश में जा कर बस जाना। भारत के इतिहास की जो पाठ–पुस्तकें उपलब्ध थीं उनमें कोई जानकारी नहीं थी की गज़नवी राज से पहले पंजाब में कौन राज करते थे। जैसे समय बीतता गया पढ़ाई का स्तर ऊँचा होता रहा। मोहयाल इतिहास के दावे– की हमारे दत्त और वैद पूर्वज काबुल और पंजाब में राज करते थे– प्रमाणिकता के अभाव में निराधार और अविश्वसनीय प्रतीत होने लगे। इतिहासकार (उनमें मोहयाल भी सम्मिलित थे) इसकी हँसी उड़ाने लगे। मोहयाल बुद्धिजीवी वर्ग हतप्रभ और हताश सा था।

आज हम आपके सामने यह रहस्योद्घाटन करेंगे कि इतिहास में यह अंतराल क्यों था और मोहयाल शासकों के नाम इतिहास की पुस्तकों में क्यों नहीं थे। यह कथा सातवीं शताब्दी में अरब देश में इस्लाम के उदय से आरम्भ होती है। इस्लाम के पैगंबर मुहम्मद साहेब की मृत्यु (632 ई) के पश्चात थोड़े समय में ही अरबों ने कई पड़ोसी देशों को सुगमता और तीव्रता से अपने आधिपत्य में कर लिया। 640 ई में ईरान (पर्शिया) भी उनके कब्जे में आ जाने से वह भारत के पड़ोसी देश हो गए। दक्षिण अफगानिस्तान में जाबुल और काबुल के दो हिन्दू राज थे और उनसे टकराव अनिवार्य था।

698 ई में एक भारी अरब सेना जाबुल पर कब्जा करने के लिए भेजी गई। वहाँ के हिन्दू राजा ने उनको बिना अवरोध के अपने देश के अंदर आने दिया और फिर पीछे अपनी सेना नियुक्त करके उनको घाटियों में घेर लिया। खाने और पीने के अभाव में अरब सैनिक मरने लगे। विवश होकर उन्होंने हिन्दू राजा की सब शर्तें स्वीकार कर लीं और भारी धन राशि हरजाने में भी दी। वापिस जाते जाते पूरी अरब सेना ध्वस्त हो गई। उनका सेनापति उस दुःख से स्वयं ही मर गया। जाबुल के हिन्दू राजा की बड़ी कीर्ति हो गई। किसी अरब सेना का जाबुल पर फिर आक्रमण करने का साहस नहीं हुआ और अगले 170 वर्ष तक वह राजवंश शान्ति, समृद्धि और गौरव से वहां राज करता रहा। जाबुल के प्रकरण को यहां विराम देते हैं।

काबुल में जो राजवंश था वह पूरी तरह जाबुल की सहायता करता था। मुस्लिम इतिहासकार प्रायः इस पूरे हिन्दू शासित भू–भाग को काबुल राज्य ही लिखते थे। इस बीच वहाँ एक भारी परिवर्तन हुआ। काबुल के राजा से जनता बहुत दुखी थी। उसके ब्राह्मण वज़ीर ने उसको हटा कर सुधार के लिए कैद कर दिया और स्वयं राजभार संभाल लिया पर अपने आपको राजा घोषित नहीं किया। कुछ समय के पश्चात उसने एक समर पराक्रमी (जंग आज़मूदा) सामन्तदेव नाम के सेना नायक को, जो उसका बेटा नहीं था, राजसिंहासन पर बैठा दिया। लगभग 840 से 960 ई. तक सामन्तदेव, उसके बेटे कमलवर्मन और पोते भीमदेव शाहि ने सत्ता और गौरव के साथ वहाँ के सार्वभौम शासकों के रूप में राज किया और अपने प्रदेश को पूर्णतया सुरक्षित रखा। इतिहास में ब्राह्मण हिन्दू शाह कहे जाने वाले यह तीन राजे आज के दत्त जाति के पूर्वज थे। काबुल के इतिहास का वर्णन भी यहीं रोकते हैं।

जैसे ऊपर बताया गया है 640 ई. में ईरान जीतने के पश्चात मुस्लिम शक्ति अफ़गानिस्तान के मार्ग से दर्रा खयबर की ओर आने के निरंतर प्रयत्न करती रही पर मुस्लिम आक्रमणकारियों को सफलता 1000 ई. में मिली। उन 360 वर्षों का इतिहास कहाँ है? इसका वर्णन पाठ्य पुस्तकों में बिल्कुल नहीं है और इसकी जानकारी विश्वविद्यालयों में इतिहास के प्राध्यापकों और उनके विभाग अध्यक्षों को भी नहीं है।

पहले मुस्लिम और फिर ब्रिटिश शासकों ने भी इस मुस्लिम विफलता का इतिहास छिपा कर रखा। एक सहस्राब्दी के लम्बे शासनकाल में इसको सामने नहीं आने दिया गया। स्वतंत्रता के पश्चात भी इतिहास लेखन का वही आकार चल रहा है। इन

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

300 (700–1000 ई.) वर्षों में से लगभग आखरी 120 वर्ष दत्त और फिर इनके पश्चात 40 वर्ष वैद जाति के पूर्वजों (जयपाल) ने काबुल पर राज किया।

गहरी खोज के पश्चात इस पूरे इतिहास का संकलन कर लिया गया है। मोहयाल इतिहास की प्रमाणिकता, विश्वसनीयता और प्रतिष्ठा अक इतिहासकारों द्वारा स्वीकारित ही रही है। इतिहास के प्रमुख "रिसर्च मैगज़ीन" अब इससे छाप रहे हैं। अब यह प्रयास करना है कि यह पाठ्य पुस्तकों में यथास्थान वर्णित हो।

हर मोहयाल अब विश्वास से अपने आप को इन सम्राटों का वंशज मान सकता है। इस आत्म–सम्मान से "मोह्यालियत" की भावना और दृढ़ होगी।

आर.टी. मोहन, *पंचकूला (मो. 9464544728)*
E-mail: rtmwrite@yahoo.co.in

माता-पिता

ईश्वर को हम जगत जननी या पिता परमेश्वर के नाम से पुकारते हैं यही अगर हम इसका दूसरा रूप देखे तो हमें अपने माता–पिता का स्वरूप दिखाई देगा जो हमारे जन्म से हमारे साथ एक मजबूत स्तम्भ की भांति खड़े रहते हैं। अगर मैं दूसरे शब्दों में व्याख्या करूँ तो हम संतान उन मछलियों की भाँति है जो जल के बिना जीवित रहीं रह सकती, चाहे जल किसी पोखर, तालाब या विशालकाय समुद्र का ही क्यों न हो मछली रूपी संतान को उस जल रूपी माता–पिता की आवश्यकता हमेशा रहती है, और रहेगी भी। अर्थात् परिस्थिति व समय की धारा कोई भी हो पर माता–पिता का स्वरूप न बदला है, और आने वाले कई युगों तक न बदलेगा।

मात–पिता यह वो दो शब्द है जिनकी तुलना करना ही व्यर्थ है। यह उस हवा की भाँति जिसका ग्रहण किए बिना हम जीवित रहने की कल्पना भी नहीं कर सकते। हमारे जीवन में ही नहीं स्वयं ईश्वर की दृष्टि में माता–पिता का स्थान सर्वोपरि है। जब–जब ईश्वर को भी धरती पर जन्म लेना पड़ा तो उन्हें भी माता–पिता की छत्र–छाया का सहारा लेना पड़ा। भगवान कृष्ण ने जन्म माता देवकी की कोख से लिया, पिता स्वरूप वासुदेव को पाया और पालन–पोषण के समय माता यशोदा की गोद का सुख प्राप्त किया, और पिता स्वरूप नंदलाला को पाया। यही नहीं विष्णु अवतार के समय माता कौशल्या, कैकयी व सुमित्रा और पिता के रूप में राजा दशरथ की गोद प्राप्त की। भगवान ने अपने सभी अवतारों में माता–पिता को उच्च स्थान दिया, उनके प्यार व क्रोध व आज्ञा को अपने मस्तक पर रखा। और राम अवतार के समय वनवास को भी हँसते हुए ग्रहण किया। शायद इसीलिए कि यह तो अमृत है, जिससे प्राप्त करने उन्हें धरती पर जन्म लेना पड़ता है।

जहाँ पिता–माता को जननी बनने का सुख प्रदान करता है वही दूसरी ओर माता–पिता को परमेश्वर होंगे, की अनुभूति प्रदान करता है दोनों मिलकर एक दूसरे को श्रेष्ठ बनाते हैं और यही श्रेष्ठता एक नया अंकुर इस जगत में लाती है। माता जहां अपने प्यार से शिष्टाचार प्यार, नम्रता नियमों तथा पालन विश्वास सम्मान करना सिखाती है, वही पिता दिन–रात भाग दौड़ कर अपनी संतान को उसे जीवन में आने वाली कठिनाइयों का सामना करने के काबिल बनाता है। ताकि जिस अंकुर को उन्होंने जन्म दिया है वह बड़ा होकर एक हरा–भरा वृक्ष बनकर अपना स्थान बनाने में सक्षम हो सके। माता–पिता सिर्फ कहने के लिए दो नाम है, परंतु यह दो शरीरों को जोड़कर बना एक स्वरूप है, जिसमें सिर्फ समपर्ण व प्यार की भावना निहित है। ईश्वर की इस अनुकम्पा को हमारा शत–शत प्रणाम है।

प्रिया बाली, *महरौली, नई दिल्ली (मो.) 9873992990*

जन्नत

1) मैंने खुशियों को गम में बदलते देखा है।
मैंने जन्नत को दोजख बनते देखा है।
किस कदर खिलते फूलों को मुरझाते देखा है।

2) वो आँसू थे या गंग धार थी,
जो पूछती थी हमसे क्या आपने हममें गुनाह देखा है।
केसर की क्यारियों से उड़ती खुशबू को बारूद का धुआं बनते देखा है।
मैंने जन्नत को दोजख बनते देखा है।

3) वो कल कल झरनों की, वो लेशियर लदे बर्फ से
मैंने लोगों को खून से लाल होते देखा है।
मैंने जन्नत को दोजख बनते देखा है।

4) वो भोले मासूम चेहरे सवाल करते हैं।
क्या आपने हममें कोई आतंकी देखा है।
वो पके बालों, झुरियों से भरे चेहरे में, मैंने यह सवाल देखा है।
मैंने जन्नम को दोजख बनते देखा है।

5) मैंने खीर भवानी मंदिर के दूधिया पानी को लाल होते देखा है।
मैंने जन्नत को दोजख बनते देखा है।

6) झील के खामोश दपर्ण में यह सवाल पूछा है।
चिनार के पत्तों ने लिपट के पावों से सजदा किया है।
अशरद, परवेज को गम में डूबे देखा है
खोये जिन्होंने अपने भाई, उन्हें जार–जार रोते देखा है।
मैंने जन्नत को दोजख बनते देखा है।

7) ऐ चांद तू कर अपनी किरणों को इतना निर्मल
जो पड़े तुम्हारी किरणे उस जन्नत पर,
धरती के स्वर्ग को फिर हम सब कें।
जन्नत यही है, जन्नत यही है, जन्नत यहीं हैं।

"कैसे हो जाए जुदा ये सर जमीने हिन्द से"
वादिए कश्मीर तो दुल्हन है हिन्दुस्तान की"

प्रो. वी.के. दत्ता, *जलंधर, पंजाब*

For courses in MERIT, visit: http://www.meritlogics.com

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor